सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज

आविर्भाव श्रावण शुक्ल द्वितीया, ई० सन् १९०७ निर्वाण माघशुक्ल चतुर्दशी, ई० सन् १९८२

सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज

(प्रमादहीन होकर गंभीरतापूर्वक पूरा लेख पढ़ें)

जब भारतवर्ष यूरोपीय साम्राज्यवाद के खूनी पंजों से जकड़ा हुआ था। सनातन मूल्यों और संस्कृति का ह्रास हो रहा था तब उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिला ग्राम भटनी में सरयूपारीण वेदपाठी ब्राह्मण श्री रामनिधि ओझा तथा परमधार्मिक शिवरानी के आंगन में सम्वत् १९६४ में श्रावण शुक्ला द्वितीया सन् १९०७ को एक महापुरुष का अवतरण हुआ। इनका बचपन का नाम **'हरनारायण_ओझा'** था। ये रामनिधि के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे।

वह केवल आठ वर्ष का बालक था उसकी प्रवृत्ति कुछ विलक्षण थी। किसी से अधिक नहीं बोलता था। कभी उँचे पर्वतों पहाड़ों पर चढ़कर घंटों एकान्त बैठकर कुछ सोचता विचारता रहता था। एक दिन वह घर से भाग गया । पिता और बड़े भाईयों नें ढूंढकर पकड़कर वापस लाया। कुछ समय पश्चात फिर भाग गया। पिता और भाई ढूंढकर लाये। डाँटा, फटकारा अगर फिर से भागा तो तुझे बहुत पीटेंगे, समझा !

वह बोला- मुझे सत्य की खोज करनी है पिताजी मुझे जाने दीजिए।

पिता ने उसकी प्रवृत्ति जानकर घर पर ही पढ़ाना शुरु कर दिया। कहीं फिर से न भाग जाऐ इसलिए पिता ने दस वर्षीय बालक का विवाह करने का विचार किया। नववर्षीया सौभाग्यवती नाम की कन्या से बालक का विवाह सम्पन्न हुआ।

किन्तु विवाह के बाद भी उसकी प्रवृत्ति न बदली। पूजन अर्चन नामस्मरण ग्रन्थों का पाठन यही उसकी चर्या रहती। एक दिन भाग ही रहा था कि कभी वापस न आऊंगा तो पिताजी ने पकड़ लिया।

वह बोला –"पिताजी मेरी देह-गेह में आसक्ति नहीं होती मुझे जाना है"। ठीक है बेटा, लेकिन मेरी एक इच्छा है कि वंशपरम्परा का उच्छेद न हो इसलिए हम तुम्हारी एक सन्तान चाहते है। उसके बाद मैं तुम्हे रोकूंगा नही- पिताजी ने कहा।

वह बोला; ठीक है पिता जी लेकिन वचन दीजिए उसके बाद आप मेरा मार्ग नही रोकेंगे। हाँ बेटा मैं वचन देता हूँ। अब वह किशोर गृहस्थ हो गया लेकिन दिनचर्या पहले जैसी ही रही। १७ वर्ष की अवस्था में उसके घर में भगवती स्वरूपा कन्या नें जन्म लिया। अब किशोर जाने की उद्यत हुआ। पिता सामने खड़े थे। माता दौड़कर गले से लिपट पड़ी बेटा तू मुझे छोडकर नहीं जा सकता। वह बोला अपने आंसू रोक दे माँ, आज मैं नही रुकंगा। लेकिन तेरे बिना मैं कैसे रहंगी ? जैसे आचार्य शंकर के बिना उनकी मां रही थी वैसे तू भी रहना माँ। सनातन धर्म पर संकट छाया है मुझे भारतभूमि

का ऋण चुकाना है। मैंने तेरे गर्भ का आश्रय लिया तेरी छाती का रक्त पिया है। तुझे वचन देता हूं तेरा दूध कलंकित न होने दूँगा। उतने में नवजात बालिका को गोद में लिऐ पत्नी ने चरण पकड़ लिए नाथ मत जाईए सती स्त्री का प्राण केवल उसका पति होता है !

वह बोला -यह तुम्हारे भी माता पिता है इनकी सेवा करो। पिता का वात्सल्य भाईयों का स्नेह माँ की ममता पत्नी का प्रेम सन्तान का मोह सब को तिनके के समान त्यागकर वह किशोर चला गया। २४वर्ष की अवस्थामें वह युवा **"धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज"** के नाम से विख्यात हुआ।

१७वर्ष की अवस्थामें हरनारायण गृहत्यागकर प्रयागसे होकर गुजर रहे थे। कुछ दूरी पर हरनारायण ने देखा कि वटवृक्ष के नीचे एक कोपीनमात्रधारी अवधूत आंखे बंद किए बैठे हैं। हरनारायण पास आकर उनके तेज को निहारने लगे। अवधूतने अन्तर्चक्षुसे किशोर को देख लिया और चर्मचक्षुओं को उन्मीलित करते हुऐ कहा, "आओ मेरे बच्चे मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। तुम नरवर जाओ और अध्ययन करो उसके पश्चात तुम मेरे पास आना। तुम पर सरस्वती की विशेष कृपा रहेगी"।

यही अवधूत शिरोमणि कुछ काल पश्चात **आदि शङ्कराचार्य** द्वारा स्थापित ज्योतिष्पीठ जोकि १६५ वर्षों से बंद पड़ी थी का उद्धार कर **"उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठोद्धारक श्रीमज्जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य ब्रह्मानन्द सरस्वती"** कहलाए।

हरनारायण पुण्यतोया गङ्गा के किनारे किनारे आगे बढे। नरवर पहुंचकर उन्होनें वहाँ देखा कि तपोमूर्ति जीवनदत्त ब्रह्मचारीजी की अध्यक्षतामें प्राचीन गुरुशिष्य परम्पराके अनुसार अध्यापन हो रहा है। एक दण्डी सन्यासी भी वहां विराजित है। वह थे तर्कवाचस्पति षड्दर्शनाचार्य विश्वेश्वराश्रम_स्वामी। इन्होनें हरनारायण को शिष्य बनाकर व्याकरण शास्त्र, साङ्गोपाङ्ग वेद व षड्दर्शनका गूढ़ अध्ययन करवाया और इनका नाम **'हरिहर चैतन्य'** रखा। हरिहर की स्मरण शक्ति फोटोग्रैफिक थी। एक बार जिस चीज को पढ़ लेते वर्षों बाद भी बता देते कि इस ग्रंथमें इतने पृष्ठ पर है।

इसके बाद हरिहरने अच्युतमुनिसे संस्कृतसाहित्य व पुराणों का अध्ययन किया। अब हरिहर चैतन्य का तप की तरफ आकर्षण हुआ। अध्ययनसे विरत हो वह तरूण तपस्वी उत्तराखंड की हिम से आच्छादित हिमालय की तलहटियोंमें तीव्र योगश्चर्या करने लगे। कौपीनमात्र धारण करना निरावरणचरण से यात्रा करना शीतोष्ण भयंकर द्वन्दों को सहन करना १९ वर्ष की अवस्थामें ही इनका स्वभाव बन गया था। कुछ समय पश्चात २४वर्षीय हरिहर चैतन्य ने ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी के पास आकर उनसे वेदान्त का गूढ़तम अध्ययन कर शिखासूत्र का त्यागकर विधिवत दण्ड ग्रहणकर नैष्ठिकब्रह्मचर्यपूर्वक सन्यास की दीक्षा ली।

अब हरिहर चैतन्य **'परमहंसपरिव्राजकाचार्य हरिहरानन्द सरस्वती'** कहलाए। वह शङ्कराचार्य ब्रह्मानन्द सरस्वती जी से दण्डग्रहण कर प्रयाग पहुंचे। सर्वप्रथम लोगों में यह चर्चा फैली कि गंगातट

पर एक कौपीनमात्रधारी युवा महात्मा विचरण करते हुए आ रहे हैं। मस्तक पर ऐसा ब्रह्मतेज मानो साक्षात भुवनभास्कर ही उदित हो गए हों। उन्हे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो साक्षात सन्यास ही मूर्तिमान होकर आया हो। वह केवल हाथ पर ही भिक्षा ग्रहण करते हैं वह भी केवल ब्राह्मणों के घर से। नमक और चीनी ग्रहण नहीं करते। कर को ही पात्र बना भिक्षा ग्रहण करते हैं इसीलिए वह **'करपात्री_जी'** के नाम से प्रसिद्ध है। (करः_एव_पात्र_यस्य_सः) कोई संग्रह-परिग्रह नही परमनिष्काम परमविरक्त। वह केवल संस्कृतमें ही सम्भाषण करते हैं। वह निरावरण चरणोंसे पैदल यात्रा करते हैं कभी सवारी नहीं करते। वह हरेक विषय का वेदप्रामाण्य से युक्तियुक्त सुन्दर समाधान करते हैं। सुस्पष्ट प्रखरवाणी अगाध पाण्डित्य से युक्त वेदपद्धति के पूर्णसमर्थक हैं। वह नरवर के विश्वेश्वराश्रम स्वामी से शिक्षित व ब्रह्मानन्द सरस्वती से दीक्षित हैं।

फिर तो सन्तसमुदाय और जनसमुदाय उनके दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। महान ब्रह्मवेत्ता उड़िया बाबा स्वयं उनके दर्शनार्थ चलकर आए। उनको आते देख करपात्री जी ने गुरुदृष्टि रखने के कारण उड़िया बाबा को दण्डवत किया।

इस तरह उनके अगाध दर्शनशास्त्र के पाण्डित्य, ब्रह्मविद्या व अद्भुत प्रवचन कुशलतासे सन्तसमाजमें बौद्धिकवर्गमें क्रान्ति का प्रसार हो गया। आगरा जिलामें एक ब्रह्मसत्र का आयोजन हुआ जिसमे दण्डीस्वामी विश्वेश्वराश्रम जी, उड़िया बाबा, अखण्डानन्द सरस्वती प्रभृति विभूतियो तथा भारतवर्ष के हजारों धुरन्धर विद्वान एकत्र हुऐ। वहां दस हजार के लगभग जनसमुदाय एकत्र होता था।

उड़िया बाबा ने वेदान्त पर प्रवचन कर विद्वत्समाज को मंत्रमुग्ध कर दिया। करपात्री जी को गीता के पन्द्रहवें अध्याय पर प्रवचन करने को कहा गया। परन्तु करपात्री जी मस्ती में आ गए और **"श्री_भगवान_उवाच"** केवल इस पद पर सात दिन तक प्रवचन करते रहे। समग्र ऐश्वर्य, धर्म, श्री, यश, जान तथा वैराग्य श्रीकृष्ण में किस प्रकार है। विभिन्न मतों के अनुसार इसका ही सप्तदिवस पर्यन्त वर्णन करते रहे।

उनकी देखा-देखी अखण्डानन्द सरस्वती ने भी पंचदशी के **"आत्मानम् चेत् विजानीयात्"** इस वचन सात दिनों तक व्याख्यान किया। सप्ताहव्यापि यह एक ऐतिहासिक ब्रह्मसत्र था।

धर्मशास्त्रों में इनके अगाध पाण्डित्य को देखकर इन्हें **'धर्मसम्राट'** की उपाधि से विभूषित किया गया। शारीरकमीमांसा के अद्भुत व्याख्याता होने के कारण यह **'अभिनवशङ्कर'** के नाम से अभिहित हुए। श्रीविद्या में दीक्षित होने के कारण इनको **'षोडशानन्दनाथ'** भी कहा गया। अब यह **'धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज'** के नाम से अखिल भारतवर्ष में प्रतिष्ठित हो गए।

करपात्री जी ने धर्मोद्धार की भावना से अखिल भारतवर्ष में हजारों महायज्ञों के आयोजन किए। गंगातट पर घास फूंस की झोपड़ी डालकर रहते थे। प्रातः एक बजे उठकर दो घंटा भ्रमण

तदन्तर शौचादि से निवृत्त हो 3 घण्टा ध्यान पश्चात रुद्राष्टाध्यायी से रुद्राभिषेक, शालग्रामादि का श्रीयन्त्रादि का पूजन व अढ़ाई घंटे में शीर्षासन में स्थित होकर सम्पुट सप्तशती का पाठ तदन्तर स्वाध्याय तदनन्तर शिष्यों को पढ़ाना व जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं का समाधान, त्रिकाल स्नान व ध्यान तथा २४घण्टे में सांय सूर्यास्त से पूर्व एक बार भिक्षाटन, यह थी धर्मसम्राट करपात्र स्वामी की दिनचर्या।

उनके साथ सत्संगार्थ संतजन पधारते रहते फक्कड़ों का सत्संग चला रहता। बाद में उन्होंने नियम और कठोर कर दिया सात दिन तक गंगाजल पर आश्रित रहकर आठवें दिन भिक्षाटन करते।

हिन्दू वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में स्वामी करपात्री का विचार था कि कर्मणा वर्ण मानने पर दिन भर में ही अनेक बार वर्ण बदलते रहेंगे। फिर व्यवस्था क्या होगी ? अतः उपनयन, वेदाध्ययन, अग्निहोत्र आदि कर्म का अनुष्ठान, भोजन, विवाह आदि सभी सांस्कृतिक कर्म जन्मना ब्राह्मण आदि के आपस में ही हो सकते हैं।

श्री स्वामी करपात्री जी महाराज भारत के परतन्त्रता के दिनों में सनातन धर्म के विपरित और विरुद्ध चलाये जा रहे कुचक्रों और षडयंत्रों से अच्छी तरह से परिचित थे। परिचित होकर वो बैठे नहीं अपितु समग्र भारत का भ्रमण कर सनातन धर्म के दार्शनिक, बुद्धिजीवियों और संत समाज को श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने अधिवेशनों, धर्मसभाओं, धर्मसेना के माध्यम से एकजुट किया और स्वंतंत्रता संग्राम में भी निर्णायक भूमिका निभाई। ब्रिटिश , मुस्लिम लीग , आर्य समाज , मिशनरीज़, दलित विचारक , राजनैतिक दल अपने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सनातन धर्म की मनमानी व्याख्याऐं और आरोप-प्रत्यारोप के द्वारा सनातन धर्म को हानि और क्षति पहुंचा रहे थे। श्री स्वामी जी ने उस समय मोर्चा संभाला और अपनी विद्वता से सनातन धर्म के विषय में जो भ्रांतियां और भ्रम फैलाये जा रहे थे उनको प्रबल प्रतिउत्तर दिया।

भारतविभाजन का सबसे पहले विरोध करने वाले करपात्री जी थे। यह बात कितने लोगो को ज्ञात है यह हम नही जानते। गाधीं, नेहरू तथा विनोबा भावे की नीतियों के वह प्रबल विरोधी थे। तथाकथित संविधान निर्माताओं अम्बेडकरादि की विचारधाराओं से वह अत्यन्त असंतुष्ट थे। निर्मित संविधान भारत के हित मे नही है यह उन्होने कई बार कहा। वह कहते थे संविधान का अर्थ है **'सनातन विधान'** और वह सनातन विधान केवल वेदों में वर्णित है वेदविहित विधान मनु याज्ञवल्क्यादि महर्षियों ने अपनी स्मृतियों में गुम्फित किया है अतः भारतीय संविधान धर्मशास्त्रों के अनुकूल **धर्मसापेक्ष पक्षपातविहीन व शोषणविनिर्मुक्त** होना चाहिए।

हिन्दू कोड बिल -

अंग्रेजों ने सनातन वैदिक हिन्दू वर्णाश्रमव्यवस्था को तोड़ने के लिऐ **'हिन्दूकोडबिल'** की रूपरेखा तैयार की थी। इसकी सारी बातें हिन्दू धर्मशास्त्रों के विपरीत थी। करपात्री जी ने कट्टर विरोध किया

जगह-जगह हिन्दू कोड़ विरोधी समितियां बनाई। नेहरू ने हिन्दूकोडबिल को पास करने का अथक परिश्रम किया। यहां तक कि त्यागपत्र की धमकी भी दी। किन्तु करपात्री जी के महत्प्रयासों से यह पास न हो सका। अगर हिन्दू कोड़ बिल पूर्णतः पास हो गया होता तो आज हिन्दू अपने ही देश में अपने अस्तित्व के लिए भीख मांग रहे होते।

करपात्र स्वामी ने 1940 में काशी में **धर्मसंघ** तथा 1948 में **रामराज्यपरिषद** की स्थापना की। काशी में ही शास्त्रों में वर्णित हजारों वर्षों से लुप्त सुमेरुपीठ की स्थापना की।

करपात्री जी द्वारा लिखित ग्रन्थ व साहित्य –

करपात्री जी ने अनेक दिव्य ग्रन्थों की रचना की आधे से अधिक ग्रन्थ अभी अप्रकाशित ही है। कुछ प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है **'वेदार्थपारिजात'** - शुक्लयजुर्वेद पर भाष्य इसका नाम 'करपात्र भाष्य' भी है। इसमे दयानंद सरस्वती की आपत्तियों का निराकरण भी महाराज ने किया है। **'भक्तिरसार्णवः'-** यह करपात्री द्वारा संस्कृत मे लिखित भक्तियोग पर उत्कृष्ट ग्रन्थ है। **'वेदस्वरूपविमर्शः'** - वेद के अपौरुषेयत्व पर शास्त्रीय विवेचन केवल संस्कृत मे लिखित। **'श्रीविद्यारत्नाकरः'** - संस्कृत में लिखित इस ग्रन्थ में श्री विद्या का सांगोपांग विवेचन किया गया है। **'रामायणमीमांसा'** - कामिक बुल्के द्वारा राम व सीता पर व रामायण की ऐतिहासिकता पर गम्भीर आक्षेपों का प्रतिकार करने के ब्याज से करपात्री जी ने सभी पाश्चात्य महामूर्खचक्रचूड़ामणि आलोचकों के सनातन संस्कृति को विकृत करने के उद्देश्य से उठाऐ गऐ गऐ आक्षेपों का निराकरण किया है। यह हिन्दी में ही उन्होने लिखा। कामिक बुल्के बैल्जियम से भारत आया हुआ मिशनरी पादरी था। इसने 'रामकथा' नामक पुस्तक लिखी। 1974 मे भारत की मूर्ख सरकार ने इस मूर्ख को पद्मभूषण से सम्मानित किया। **'चातुर्वण्यसंस्कृतिविमर्शः'** - वर्णाश्रमव्यवस्था पर संस्कृत में लिखित उत्कृष्ट प्रबन्ध। **'धर्मकृत्योपयोगितिथ्यादिनिर्णयः'** - कुम्भादि महापर्वो की तिथियों का सिद्धान्त ज्योतिश्शास्त्रीय निर्णय। यह उनके अगाध ज्यौतिषीय पाण्डित्य का परिचायक है। केवल संस्कृत मे लिखा गया है। श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने अपने ग्रन्थों के माध्यम से कई प्रकार की विचारधाराओं और दर्शन से श्रेष्ठ सनातन धर्म को सिद्ध किया। उदाहरण के लिये **"मार्क्सवाद और रामराज्य"** तथा **'भक्ति सुधा', "विचारपीयूष"** जैसे अनेक ग्रन्थों की संरचना कर श्री स्वामी जी जहां वैदिक वांगमय में अन्तरनिहीत सर्वमंगलमयी विचारधारा और दिग्विजयी दर्शन को विश्वपटल पर रखा। इसके अतिरिक्त **कालमीमांसा, विचार पीयूष, भागवतसुधा, भक्तिसुधा, राधासुधा, गोपीगीत, भ्रमरगीत** आदि दिव्यातिदिव्य ग्रन्थों का सृजन करपात्र स्वामी ने किया है। इसके अतिरिक्त राजनीति व सामाजिक दशा पर उनकी लघुकाय

पुस्तकें लिखी हुई है।

वीरसावरकर, गोवलकर आदि वैसे तो देशभक्त थे परन्तु उनकी भी शास्त्रीय सिद्धान्तों के विपरीत देशभक्ति, राष्ट्रवाद सम्बन्धि नीतियों को वे स्वीकार नहीं करते थे।

धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज ने देशरक्षा के लिए अनेकों महायज्ञों का आयोजन किया। भारत के कोने कोने मे जाकर शास्त्रीय व्याख्यान दिए। जब वह रासपञ्चाध्यायी पर प्रवचन करते तो हजारों सन्तों विद्वानों व श्रद्धालुओं का सागर उमड़ पड़ता। उन्हें सिद्धान्ततः अद्वैत और भावतः भक्ति का प्रतिपादन अत्यन्त भाता था।

उनके पाण्डित्य पर कोई मुग्ध हुऐ बिना नही रह पाता था। अखंडानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि 'वे_वेदोंसे लेकर अवकहडाचक्र तक के जानकर थे'। हजारों वर्षों तक वैदेशिक आक्रान्ताओं के आक्रमणों से जर्जर होने, पराधीन रहने और ऋषियों द्वारा स्थापित गुरुशिष्यपरम्परा, पूजापद्धतियों, उपासनापद्धतियों को म्लेच्छों और दस्युओं के द्वारा भङ्ग किए जाने पर भी भारत आज तक जीवित क्यूँ है ? जरा सोचिए ! इसके पीछे एक ही शक्ति ने काम किया है वह है **'वेदोक्तवर्णाश्रमधर्मर्यादा'।**

इस एक मर्यादा में श्रद्धा होने के कारण आर्यहिन्दू सारे जुल्मों को सह रहे हैं। और यह मर्यादा नही रहेगी तो भारत स्वतः नष्ट हो जाऐगा। इसके न रहने से कर्मसंकरता, वर्णसंकरतादि दुर्गुणों की उत्पत्ति हो जाऐगी और सच्चरित्रता, पातिव्रत्य आदि सभी सद्गुणों का लोप हो जाऐगा। फिर किसी मां के गर्भ से महापुरुष का जन्म नही होगा। सारा संसार म्लेच्छप्रायः हो जाऐगा।

अंग्रेज इस बात को जानते थे, अतः उन्होने गुरुकूलों को तुड़वाकर अंग्रेजी कॉलेजों की स्थापना करवाई। लॉर्ड मैकाले ने 6 नीतियां भारतीय शिक्षा पद्धति को नष्ट करने के लिये बनाई। क्यूंकि अंग्रेजों को कम्युनिस्टों को और तथाकथित पाश्चात्य दार्शनिकों को खतरा तो केवल मनु की नीतियों से है न। वो मनु जिनके विषय में श्रुति स्वयं कहती है **"यद्यद् मनुरब्रवीत् तत्तत् भैषज्यम्"** जो जो कुछ मनु ने कहा वह सब महौषध है। जब तक मनु के संस्कार हिन्दूओं की रगों में है तब तक तो इन असुरों के सारे प्रयास विफल ही रहेंगे।

करपात्री जी ने सनातनसंस्कृति की रक्षा लिए अनेकों गुरुकुलों व विद्यालयों का निर्माण करवाया। प्राचीन उपासना पद्धतियों को पुनः प्रारम्भ करवाया। आज भारत मे थोडी बहुत जो भी पूजोपासना पद्धतियां शेष है वह करपात्री जी तथा उनके जैसे कई महापुरुषों के तप का वरदान है अन्यथा हमें ये भी मालूम नहीं होता कि हम सनातन धर्मी हिन्दू है और हम तपःपूत ऋषियों की सन्तान है।

धर्मसम्राट करपात्री एक युगपुरुष थे। वह पूर्वजन्म की विद्या और तप लेकर अवतरित हुऐ थे अन्यथा इतना महत्कार्य किसी साधारण व्यक्तित्व की बात नही। रामराज्य के विषय पर जब वह कुछ बोलते तो सदैव मानस की इन पंक्तियों को दोहराया करते-

अलप मृत्यु नही कबनेउ पीरा । सब सुन्दर सब निरुजसरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना । नहि कोउ अबुध न लच्छनहीना ॥
सब उदार सब पर उपकारी । विप्रचरन सेवक नरनारी ॥
एकनारिव्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

उनसे किसी ने पूछा कि अगर समग्र भारतीय संस्कृति व मर्यादा का एकत्र दर्शन करना हो तो कौन सा ग्रन्थ पढ़ना चाहिए? करपात्री जी बोले, **'रामचरितमानस'** सकलनिगमागमसम्मत ग्रन्थ है। इसकी एक चौपाई पर भी कोई प्रश्नरेखा नही खींच सकता। यह सर्वथा निरापद ग्रन्थ है। 'मानस' के प्रति उनकी अत्यन्त श्रद्धा थी।

श्री स्वामी करपात्री जी के द्वारा **ज्योर्तिमठ** के **शङ्कराचार्य** पद पर **श्री स्वामी स्वरुपानन्द सरस्वती** जी महाराज को प्रतिष्ठित किया गया। श्रीगोवर्द्धनमठ के वर्तमान **श्रीमज्जगदगुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती** जी महाराज भी श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के परम शिष्य हैं।

सान्निध्यविलोप

(**श्रीमज्जगदगुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती** जी के जीवन चरित पर आधारित ग्रन्थ **दिव्यानुभूति-जीवनज्योति** द्वितीय भाग से संकलित)

श्रीरामेश्वरप्रसाद सिंह' रौआ' जीके सम्मुख पूज्यपाद धर्म- ब्रह्ममर्मज्ञ गुरुदेवने मुझसे पूछा- 'बताओ संसारमें शरीर छोड़नेके लिए सर्वोत्तम कौन-सा स्थान है ?'

मैं समझ गया कि पूज्य गुरुदेव स्वयंको तिरोहित करना चाहते हैं। ये हृदयसे स्वस्थ हैं और बाहरसे देश-काल-व्यक्तिके मानसे अतीत हैं। इन्होंने योगको लोकसङ्ग्रहमें गुप्त कर रक्खा था। जीवनके अवसानमें उस गुप्त योगनिष्ठाको ये व्यक्त किये हुए हैं।

पूज्य गुरुदेवने कहा- 'इसमें क्या सङ्कोच है। शरीर तो नश्वर है। मेरे प्रश्नका उत्तर दो'। मैंने कहा -'भगवन् ! देहत्यागके लिए सर्वोत्तम क्षेत्र वाराणसी है'।

पूज्य गुरुदेवने कहा- 'वाराणसीमें भी कौन सा क्षेत्र देहत्यागके लिए सर्वोत्तम है ?'

मैंने कहा- 'जहाँ आप विराजमान हैं, यह केदारक्षेत्र'।

पूज्यपादने पूछा- 'देहत्यागके लिए कौन सा सर्वोत्तम काल है ?'

मैंने कहा- 'उत्तरायण शुक्लपक्ष अष्टमी, चतुर्दशी आदि शुभ तिथि'।

पूज्यचरणोंने पूछा- 'अभी कौन - सा काल है ?' मैंने कहा- 'दक्षिणायन'।

पूज्यचरणने पूछा – 'देहत्यागके बाद संन्यासीके शरीरको क्या करना चाहिए'।

मैंने कहा- 'दो प्रशस्त प्रक्रम है। प्रथम जलप्रवाह और द्वितीय भूसमाधि'।

पूज्यचरणने कहा – 'दोनोंमें उत्तम पक्ष कौन है ?'

मैंने कहा – 'वाराणसीकी सीमामें अभिमत क्षेत्रमें तदर्थ भूमि सुलभ होना कठिन है; परन्तु गङ्गा सुलभ हैं। अत एव यहाँ जलसमाधि ही उत्तम है'।

पूज्यचरणने कहा – सुनो ! 'तत्त्वज्ञको देहत्यागमें स्थानविशेष, कालविशेषका आग्रह नहीं रखना चाहिये। परन्तु उत्तम देश, उत्तम काल सुलभ हो तो उसकी उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए'।

मैंने समझ लिया कि पूज्यचरण केदारघाटमें उत्तरायण आते ही देहत्याग करना चाहते हैं।

एक दिन पूज्यचरणने कहा- सुनो ! 'आत्मा अमर है। शरीर नश्वर है। मैंने यह शरीर कालको सौंप दिया है। जब चाहे, तब इसे वह ले जाय'।

वे बरामदेमें घूमते समय भी साधकके सिरपर गमलामें रखे तुलसीका दर्शन करते रहते थे। वे पूज्य जगद्गुरु - शङ्कराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी, स्वामी श्रीनन्दनन्दनानन्दसरस्वतीजी, स्वामी विपिनचन्द्रानन्दसरस्वती 'जज स्वामीजी', स्वामी रामदेव परमहंसजी, स्वामी कृष्णानन्द सरस्वतीजी तथा मुझसे कुछ समय कथावार्त्ता अवश्य सुनते। वे बहुधा विनयपत्रिका, श्रीमद्भागवत, उपनिषद्, श्रीविष्णुसहस्रनाम, श्रीरामरक्षास्तोत्र और श्रीरामचरितमानसका पाठ भी अद्भुत आह्लादपूर्वक सुनते। उन्होंने माघशुक्लचतुर्दशीको मध्याह्नकालमें सन् १९८२ में पूजनोपरान्त श्रीगङ्गाजीके तटपर केदारघाटस्थित भवनगत निज कक्षमें देहत्यागकर ब्रह्मनिर्माण लाभ किया।

७ नवम्बर १९६६के बाद गोरक्षा महाभियानको क्रियान्वित करनेके सन्दर्भमें जब दिल्लीके तिहाड़ जेल में पूज्य श्रीकरपात्रीजी महाभाग निवास कर रहे थे, तब उन्होंने प्रथम श्रेणीको यह कहकर अस्वीकार किया था कि जब अन्य सत्याग्रहियोंको द्वितीय श्रेणी प्राप्त है, तब मुझे भी द्वितीय श्रेणीमें ही रहना है। उन दिनों दिल्लीमें जनसङ्घकी सरकार थी और केन्द्रमें इन्दिरागाँधी शासन कर रही थीं। कारागारमें चौबीस घण्टे पूर्व खूनी कैदियोंको बेड़ी - हथकड़ीसे मुक्तकर दिया गया था। गोभक्त सत्याग्रहियोंपर प्रहार करनेके लिए उन्हें लोहेकी छड़ी दे दी गयी थी। दूसरे दिन गोभक्त सत्याग्रहियोंपर प्रहार करते हुए वे खूनी कैदी पूज्य श्रीकरपात्रीजी पर प्रहार करनेकी भावनासे आये। यद्यपि दो सन्तोंने उन्हें बचानेकी भावनासे उनके शरीरको खड़े होकर अपने शरीरसे आच्छादित कर लिया; तथापि लोहेकी छड़ीका अग्रभाग उनकी एक आँखमें चुभ गया। वे देशी दबाके अतिरिक्त अन्य कोई दबा मुँहमें डालते

नहीं थे, इञ्जेक्शन लेते नहीं थे। ऐसी स्थितिमें भयङ्कर वेदना सह रहे थे। कालान्तरमें ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्रीमज्जगदुरु - शङ्कराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रजी महाराजके अनुरोधपर उन्होंने भुवनभास्कर सूर्यकी धारणासे उस असह्य पीड़ाको संयत किया। वे कहा करते थे – 'विप्र, धेनु, सुर, सन्तादि सनातन प्रशस्त मानबिन्दुओंकी रक्षाके लिए कटिबद्ध मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीरामके निरावरण चरणकमलोंमें दण्डक वनके कुश - कण्टक चुभे, ऐसी स्थितिमें यदि हमारे सुकोमल नेत्रोंमें लोहमय काँटे भी चुभाए जाँय, तो भी हमें हूँ नहीं करना चाहिए'। सन् १९६७ की यह घटना थी। उनका यह कथन उनके जीवनमें पूर्णतः चरितार्थ हुआ। सन् १९८२ में नेत्र पीडा पुनः उभड़ आयी। उस वेदनाकी दशामें ही उन्होंने ज्ञानाग्र योग तथा भक्तिका आलम्बन लेकर माघशुक्ल चतुर्दशी, सन् १९८२में पूजनोपरान्त मध्याह्नकालमें पूज्यचरणोंने केदारघाटमें देहत्याग किया।

वाराणसीसे वृन्दावन आनेके तीन महीने बाद श्रीश्यामसुन्दर वाजपेयीके प्रबल अनुरोध पर स्वामीजी (**श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती**) वृन्दावनसे एक उत्सवमें मेरठ पधारे। सूचना प्राप्त करते ही स्वामीजीने (**श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती**) मेरठसे वाराणसीके लिए प्रस्थान किया। काशीमें टाऊनहालके प्राङ्गणमें लोकदर्शनार्थ गुरुदेवका श्रीविग्रह एक पुष्पयान पर प्रतिष्ठित था। पुरीपीठके श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी, ज्योतिर्मठके श्रीमज्जगदुरु शङ्कराचार्य श्रीस्वामी स्वरूपानन्दसरस्वतीजी एवम् स्वामी श्रीनन्दनन्दनानन्दसरस्वतीजी, स्वामी श्रीसदानन्दसरस्वती 'वेदान्तीजी', स्वामी श्रीजगन्नाथानन्दसरस्वतीजी, ब्रह्मचारी श्रीलक्ष्मणचैतन्यजी आदि सन्तप्रवर विद्यमान थे। वृन्दावनसे श्रीविपिनचन्द्रानन्दसरस्वती 'जज स्वामीजी' भी पहुँच चुके थे। शोकाकुल अधिकांश आर्यसमाजियों और मुसलमानोंके घरोंमें भी उस दिन चूल्हा नहीं चेता था। हजारों भक्तोंकी भीड़ सबको आश्चर्य चकित कर रही थी।

विमानसे गङ्गा तटपर तथा नौकासे केदारघाट तक श्रीविग्रहको लाया गया। नौकारूढ़ भक्तोंसे समाच्छादित श्रीगङ्गाका अपूर्व दृश्य था। जलसमाधिके पूर्वका कृत्य श्रीलक्ष्मीकान्त दीक्षितजीने विधिवत् सम्पन्न करवाया । स्वयं श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य पुरीपीठाधीश्वरजीने पूज्य चरणोंके शरीरको जल समाधि देना चाहा। इतनेमें एक बृहत् जलयानके ऊपरी कक्ष पर कुर्सीपर विराजमान एक व्यक्तिने उच्च स्वरसे आवाज दी- 'शङ्कराचार्यजी सावधान ! मेरा कर चुकाये बिना आप धर्मसम्राट् के शरीरको प्रवाहित नहीं कर सकते'।

पूज्य शङ्कराचार्यजीने कहा- 'मुझ पर शासन करनेवाला कौन है ?'

पारखी व्यक्तियोंने कहा- 'ये दलितराज हैं। इतनेमें जलयान समीप आ गया। दलितराजने अपने यानसे दोनों आचार्योंको हाथ जोड़कर नतमस्तक होकर प्रणाम किया'। इतने में दलित राजाके रथ पर नोटोंकी वर्षा करनेके लिए उद्यत भक्तोंको दलितराजने रोकते हुए कहा- 'मुझे यह नहीं चाहिए'।

पूज्याचार्य चरणोंने कहा- 'तो, बोलो भाई क्या चाहिये ?' राजाने कहा- 'हमें पूज्य स्वामीजीके शरीरमें सुशोभित रुद्राक्षकी माला चाहिये ।'

पूज्याचार्यचरणोंने कहा- 'हजारों भक्त गङ्गामें नौका पर विराजमान हैं। उनमें मालाको लेकर विवाद न हो जाय । अतः हमने यह निर्णय लिया है कि पूज्यचरणोंके गलेमें संलग्न सब माला श्रीविग्रहके साथ ही गङ्गाजीमें समाहित हो जाँय'।

राजा हरिश्चन्द्र तथा उनके पूर्वजोंके समयसे परम्पराप्राप्त काशीश्मशानके अधिपति अन्त्यजराजने कहा- 'तो आपके गलेकी माला चाहिये'। तत्काल पूज्यचरणोंने कीमती रुद्राक्षमाला, गलेसे निकाल कर दे दी। इस सौहार्दपूर्ण सनातनसंस्कृतिका सबने जय हो, जय हो, कहकर स्वागत किया।

शोकसिन्धुमें निमग्न श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य पुरीपीठाधीश्वरजीने पूज्य चरणोंके शरीरको जल समाधि दी। सबने यथायोग्य स्नान किया। क्रमशः यथावसर श्रद्धाञ्जलिसभा, माहेश्वरबलि – आराधनादि कृत्य पुरीपीठाधीश्वरजीकी अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। स्वामीजीने काशीपीठके आचार्य स्वामी श्रीशङ्करानन्दसरस्वतीजी, पुरीपीठके श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी और ज्योतिर्मठके श्रीमज्जगदुरु- शङ्कराचार्य श्रीस्वामी स्वरूपानन्दसरस्वतीजीमें सामञ्जस्य साधकर अपेक्षित विविध कृत्योंके सम्पादनका मार्ग प्रशस्त किया। स्वामी चिन्मयानन्दके सहित स्वामीजीने ईशादि दश उपनिषत्, श्रीमद्भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्यका पारायण किया।
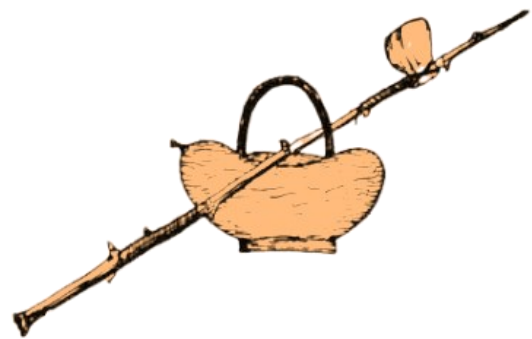
श्रद्धांजलियाँ -

श्रृंगेरी पीठाधीश्वर शङ्कराचार्य श्री स्वामी अभिनव विद्यातीर्थ जी ने आपको श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा ---

"पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ब्रह्मविद् थे और ब्रह्मविद् ब्रह्म ही होता है। तात्पर्य यह है कि स्वमीजी नहीं रहे , यह हम कैसे कह सकते हैं ? पचास वर्ष पहले देश में इतने धर्मानुरागी थे ही नहीं , जितने आज उनकी तपस्या से है। धर्म के तो पर्याय ही थे। ऐसे महात्मा यदि कुछ दिन और हमलोगों के बीच रहते, तो हम लोगों का काम आगे बढ़ जाता"।

श्रीगोवर्द्धनमठ पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री स्वामी निरन्जन देव तीर्थ जी महाराज ने श्रद्धांजलि व्यक्त की ---

"मुझे पूर्वाश्रम के पिताजीने महाराजश्री के सुपुर्द किया, जिसका निर्वाह उन्होंने अन्त तक किया। पूज्यश्री के अन्तिम सन्देश सनातन धर्म के विरोधियों से लोहा लेने, वर्णाश्रम मर्यादा की रक्षा करने एवं गोमाता की हत्या रोकने का प्रयास करने के लिए पूरी तरह डटे रहना। आग लगे, ओला पड़े, जरूरत पड़े तो फांसी के तख्ते पर झूल जाना। अतः इस कार्य में जीवन उत्सर्ग भी हो जाए, तो भी हमें खेद नहीं होगा। पूज्यश्री द्वारा स्थापित संस्थाएं पूज्यश्री का यशमय शरीर है। यहां झाड़ू देने में भी अपने को गौरवान्वित समझूंगा। पूज्यश्री ने वेदों पर जो काम किया है, उसे पूरा कर प्रकाशित किया जायेगा। जिस प्रकार सूरदास को राह पर लाने के बाद श्रीकृष्ण ने उन्हें छोड़ दिया, उसी प्रकार पूज्यश्री ने हमें राह पर लगाकर छोड़ दिया। उनके अन्तिम सन्देश का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है"।

शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीमद् अभिनव सच्चिदानंद तीर्थ जी ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा --

"वर्तमान शताब्दी में भगवान् आद्य श्री शङ्कराचार्य जी महाराज द्वारा प्रतिष्ठापित अद्वैत सिद्धान्त को आगे बढाने का कार्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने किया। जगद्गुरु भगवान् श्री शङ्कराचार्य जी द्वारा स्थापित चारों पीठ देश की चारों दिशाओं में गत ढाई हजार वर्षों से वेदान्त मत के प्रचार-प्रसार में निरत हैं। वर्तमान समय में धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने सनातन धर्म की इन पीठों को भारतवर्षीय धर्मसंघ आदि के माध्यम से सुगठित रूप से आध्यात्मिक जगत् में प्रतिष्ठित किया। अनेक यज्ञों के अनुष्ठान पूर्ण वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न कराये तथा सर्ववैदिक शाखा सम्मेलनों के

आयोजन कराके सनातन धर्म की महती सेवा की। उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कराया तथा सुप्त सनातनी समाज को गोरक्षा, धर्म-रक्षा की ओर प्रेरणा देकर जन-आन्दोलनों का संचालन किया। वे बड़े कर्मनिष्ठ , सामर्थ्यवान् , वेदान्त-निष्ठ महापुरुष थे"।

ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा --

"अनन्त श्री करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने से देश की एक ऐसी अपूरणीय क्षति हुई है कि जिसे पूरा नहीं किया जा सकता । वे इस युग की महान् विभूति थे । उन्होंने धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया और अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म के प्रचार-प्रसार तथा लोककल्याण के लिए अर्पित कर दिया। स्वमीजी ऐसे समय में पैदा हुए, जब भौतिक विज्ञान और आधुनिकता के कारण संसार में अन्याय, अत्याचार और अनैतिकता का बोल-बाला था लोगों का धर्म तथा वेद-शास्त्रों से विश्वास उठ गया था। लेकिन स्वमीजी ने अपनी लेखनी तथा उपदेशों से लोगों को धर्म तथा सत्य के मार्ग पर लगाया। मैंने पूज्यश्री के साथ रहकर अध्ययन किया तथा श्रीविद्या की दीक्षा ली। महाराज श्री एक श्लोक कहा करते थे।---

"मतयो यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानरा: ।

शास्त्राणि यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति ते नरा:"

प्रत्यक्षानुमानादि मूलक बुद्धि जहां तक जाती है , वहां तक ही वानर आदि पशु जाते हैं। प्रत्यक्षानुमान के साथ ही शास्त्र जहां तक चलते हैं , वहां तक चलने वाला प्राणी नर होता है। जीवन , ज्ञान , विज्ञान , दर्शन , योग , धर्म आदि का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जिसमें उनकी गहरी पहुँच नहीं थी। महाराजश्री साक्षात् ब्रह्म स्वरूप थे । उन्होंने भीष्म की तरह उत्तरायण होने पर ही प्राणों का परित्याग किया। यह केवल संयोग नहीं माना जा सकता। हम केवल प्रार्थना करते हैं कि वे अपने पदचिन्हों पर चलने की हमें प्रेरणा करें"।

वृन्दावन के सुप्रसिद्ध श्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्रद्धांजलि समर्पण करते हुए कहा ---

"श्रीस्वामी करपात्री जी महाराज की प्रतिभा लौकिक नहीं, सर्वथा अलौकिक-दैवी थी। धर्म और ब्रह्म में उनकी अबाध गति थी । मेरी उनमें गुरुबुद्धि वर्षों से रही है और आज भी अडिग है। वे

कारक कोटि के महापुरुष थे। उनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वे राजनीति में सक्रिय भाग लेकर कुछ अनुचित करते रहे। उन जैसा ब्रह्म और धर्म का मर्मज्ञ मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं था"।

इनके अतिरिक्त भी अन्य कई सन्त-विद्वान् आदि ने श्रद्धांजलियाँ समर्पित की ।

वास्तव में श्री स्वामी करपात्री जी महाराज को जिस **अभिनवशङ्कर** और **धर्मसम्राट** की उपाधि से विभूषित किया गया वो उनके त्याग, तपस्या, पुरुषार्थ और विद्वतापूर्ण जीवन के लिये सार्थक ही है। श्री स्वामी जी वास्तव में **धर्मसम्राट** थे, हैं और रहेंगें। "धर्मसम्राट" एकोअहं, द्वितीयो नास्ति, न भूतो न भविष्यति (धर्म सम्राट एक ही हैं दूसरा कोई नहीं ना भूत में न भविष्य में)।

उन्होनें भारतीय समाज को यह प्रसिद्ध प्रार्थना प्रदान की -

धर्म की जय हो ! अधर्म का नाश हो ! प्राणियों में सद्भावना हो ! विश्व का कल्याण हो !
गोमाता की जय हो ! गोहत्या बन्द हो ! भारत अखण्ड हो ! हर हर महादेव !

परमानन्दसमुद्रोल्लासनिवासैकपूर्णिमा ज्योत्स्ने। श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे ॥

परमानन्दरूप समुद्रके उल्लासके उद्गमस्थान पर्णचन्द्रज्योतिःस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ॥

संसृतिसागरनिपतल्लोकसमुद्धारकारणीभूते। श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे ॥

जन्म - मृत्यु, सुख - दुःखादिकी अनादि और अजस्र परम्परारूपसंसृतिसागरमें निमग्न प्राणियोंके समुद्धारमें हेतुस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ॥

जय घोष

धर्मस्य जयोऽस्तु, अधर्मस्य नाशोऽस्तु , प्राणिषु सद्भावनाऽस्तु ,

विश्वस्य कल्याणमस्तु गोमातुः जयोऽस्तु , गोहत्यायाः निरोधोऽस्तु

धर्मकी जय हो ! अधर्मका नाश हो ! प्राणियोंमें सद्भावना हो !

विश्वका कल्याण हो ! गोमाताकी जय हो ! गोहत्या बन्द हो !

धर्मस्य हि जयो भूयादधर्मस्य पराजयः। भूयात्प्राणिषु सद्भावो विश्वस्यास्य शिवं सदा॥

धर्मकी जय हो, अधर्मका नाश हो, प्राणियोंमें सद्भावना हो, इस विश्वका सदा कल्याण हो॥

गवां वै मन्त्रमूर्त्तीणां पुनर्भूयाज्जयो जयः। कलङ्को गोवधोद्भूतः प्रभो राष्ट्रादपैतु नः ॥

मन्त्रमूर्त्ति गोवंशकी पुन : जय हो, जय हो। हे प्रभो ! हमारे राष्ट्रसे गोवधसे समुत्पन्न कलङ्क दूर हो ॥

भूयाद्भारतमस्माकमखण्डं धर्ममण्डितम् । स्वामिनां करपात्राणां वर्द्धतां धर्मसंहतिः ॥

हमारा भारत अखण्ड और धर्मसमन्वित हो। करपात्रस्वामीके द्वारा संस्थापित धर्मसङ्घ उत्कर्षको प्राप्त हो॥

शम्भो हरहरेत्युच्चैर्महादेवेति गर्जनम् । सद्धर्मवर्त्मपान्थानामस्माकं राजतां भुवि ॥

उच्चस्वरसे शम्भो हर - हर महादेवका गर्जन हो ।

सनातनधर्ममार्गपर प्रयाण करनेवाले हमारे पथिक भूमण्डलपर सुशोभित हों ।

शुभं भूयाद्धि विश्वस्य प्राणिनः सन्तु निर्भयाः। धर्मवन्तश्च मोदन्तां ब्रह्मज्योतिः समेधताम्॥

विश्वका कल्याण हो , प्राणी निर्भय हों तथा धर्मात्मा प्रमुदित हों ,

ब्रह्मजिज्ञासुओंके हृदयमें स्वप्रकाश ब्रह्मविज्ञान उद्दीप्त हो॥

परमानन्दसमुद्रोल्लासनिवासैकपूर्णिमा ज्योत्स्ने। श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे॥

परमानन्दरूप समुद्रके उल्लासके उद्गमस्थान पर्णचन्द्रज्योतिःस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ॥

संसृतिसागरनिपतल्लोकसमुद्धारकारणीभूते। श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे॥

जन्म - मृत्यु, सुख - दुःखादिकी अनादि और अजस्र परम्परारूपसंसृतिसागरमें निमग्न प्राणियोंके समुद्धारमें हेतुस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ॥

सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज की जय हो !

हर हिन्दू सेना हो ! हर हिन्दू सनातनी हो !

हम भारत भव्य बनाएँगे ! हम हिन्दू राष्ट्र बनाएँगे ! हिन्दू राष्ट्र भारतवर्ष की जय हो !

भूयाद्भारतमस्माकमखण्डं धर्ममण्डितम् ।

स्वामिनां करपात्राणां वर्द्धतां धर्मसंहतिः ॥

धर्मसङ्घ – पीठपरिषद – आदित्यवाहिनी - आनन्दवाहिनी